

Padma Shri



SHRI PAKARAVOOR CHITHRAN NAMBOODIRIPAD (POSTHUMOUS)

Shri Pakaravoor Chithran Namboodiripad was a multifaceted personality and a prominent figure in the socio-cultural sphere of Kerala. He was a resourceful teacher, eminent educationist, adept organizer, and above all a passionate traveler.

2. Born on 15th January, 1923 in a small hamlet in Malappuram District of Kerala, Shri Namboodiripad was initiated into the system of Gurukula at a very early age of seven and underwent rigid training in Samaveda, Sanskrit Kaavya and Shastra for seven years under his father. He did B A (Hons), in Economics from Pachaiyappa's College, Chennai.

3. After completing his studies, Shri. Namboodiripad returned to his native place and finding the hardships faced by children, he started a High school. Under his leadership, the school famously imparted value-based education for the younger generation of the locality. After a few years, he handed over the ownership of the school to the Government of Kerala for a token sum of One Rupee. This institution has now been renamed after him as PCN Higher Secondary Government School and is currently excelling in academic and co-curricular spheres.

4. Shri Namboodiripad was inducted to the State Education Department as District Education Officer and retired in 1978 as the Joint Director of Education, Kerala. It was during this period, under his leadership the Youth Festival of Schools of Kerala was transformed into a grand event for promoting arts and cultural abilities among school children in a competitive environment. Currently this festival is one of the most important cultural events in Kerala and has gained national attention. On retirement, he was appointed as the Secretary of Kerala Kalamandalam, (now Kerala Kalamandalam deemed University) the iconic institution offering courses in traditional Kerala art forms like Kathakali, Koodiyattam, Mohiniyattam etc. His astute administrative ability coupled with his knowledge and passion of traditional arts, helped Kerala Kalamandalam to attain global attention. He led a troupe of artists to West Europe and USA, besides other states in India, and their performances were highly appreciated. During his period, Kerala Kalamandalam became an institution of eminence and began to attract scholars and students from foreign countries.

5. Realizing the sad plight of pensioners of the state, Shri Namboodiripad founded a movement for pensioners of the state with no political affiliations. The organization, now called Kerala State Service Pensioners Union, has been instrumental in providing bargaining power to the senior citizens and is the biggest of such unions of pensioners in the country. He was also the founding member of Bharathiya Vidya Bhavan, Thrissur chapter and was actively involved in its cultural and academic activities till his death. Above all, he holds the unique record of visiting the Himalayas for thirty times in a row. He was the Acharya of the pilgrimage group of Shree Sarada Ashram Nagercoil for a long time, until reaching his centenary.

6. Shri Namboodiripad passed away on 27th June, 2023.

पद्म श्री



श्री पकरावूर चित्रन नम्बूतिरिपाड़ (मरणोपरांत)

श्री पकरावूर चित्रन नम्बूतिरिपाड़ बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे और केरल के सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में अत्यंत विशिष्ट स्थान रखते थे। वह जहां एक साधन-संपन्न शिक्षक थे वहीं प्रख्यात शिक्षाविद्, कुशल संगठनकर्ता और इस सबसे ऊपर वह एक उत्साही पर्यटक थे।

2. 15 जनवरी, 1923 को केरल के मलप्पुरम जिले के एक छोटे से गांव में जन्मे, श्री नम्बूतिरिपाड़ को सात साल की कम उम्र में गुरुकुल प्रणाली में दीक्षित किया गया और उन्होंने अपने पिता के सान्निध्य में सात वर्षों तक सामवेद, संस्कृत काव्य और शास्त्र में कठोर प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने चेन्नै के पचैयप्पा कॉलेज से अर्थशास्त्र विषय में बी ए (ऑनर्स) की डिग्री प्राप्त की।

3. अपना अध्ययन सम्पूर्ण करने के पश्चात, श्री नम्बूतिरिपाड़ अपने पैतृक गाँव लौट आए और गाँव के बच्चों की शिक्षा में आने वाली चुनौतियों को देखते हुए उन्होंने एक उच्च विद्यालय प्रारंभ किया। उनके नेतृत्व में, इस विद्यालय ने उस क्षेत्र में युवा पीढ़ी को मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान की। कुछ वर्षों के बाद उन्होंने एक रुपये की सांकेतिक राशि पर विद्यालय का स्वामित्व केरल सरकार को सौंप दिया। इस संस्थान का नाम अब उनके नाम पर पीसीएन हायर सेकेंडरी गवर्नमेंट स्कूल कर दिया गया है और वर्तमान में यह शैक्षणिक और सह-पाठ्यचर्या क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है।

4. श्री नम्बूतिरिपाड़ को राज्य शिक्षा विभाग में जिला शिक्षा अधिकारी के रूप में नियुक्ति दी गई और वह 1978 में केरल के संयुक्त शिक्षा निदेशक के रूप में सेवानिवृत्त हुए। इस अवधि के दौरान, उनके नेतृत्व में, केरल के विद्यालयों के युवा महोत्सव को प्रतिस्पर्धी माहौल में स्कूली बच्चों के बीच कला और सांस्कृतिक क्षमताओं को बढ़ावा देने के लिए एक भव्य कार्यक्रम में परिवर्तित किया गया। वर्तमान में यह महोत्सव केरल के सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रमों में से एक है और इसने राष्ट्रीय स्तर पर लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। सेवानिवृत्ति के पश्चात उन्हें कथकली, कूडियाट्टम, मोहिनीअट्टम आदि जैसे पारंपरिक केरल कला रूपों में पाठ्यक्रम प्रदान करने वाली प्रतिष्ठित संस्था केरल कलामंडलम (अब केरल कलामंडलम मानित विश्वविद्यालय) के सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था। उनकी अद्भुत प्रशासनिक क्षमता और पारंपरिक कला का ज्ञान और जुनून के परिणामस्वरूप केरल कलामंडलम ने विश्व भर के कला प्रेमियों का ध्यान अपनी ओर खींचा। उन्होंने कलाकारों की मंडली के साथ भारत के अन्य राज्यों के साथ साथ पश्चिमी यूरोप और अमेरिका का दौरा किया और वहाँ उनके प्रदर्शन को बहुत सराहा गया। उनके कार्यकाल के दौरान, केरल कलामंडलम एक प्रतिष्ठित संस्थान बन गया और दुनिया भर के विद्वान और छात्र इसके प्रति आकर्षित होने लगे।

5. राज्य के पेंशनभोगियों की दुर्दशा को महसूस करते हुए, श्री नम्बूतिरिपाड़ ने राज्य के पेंशनभोगियों के लिए बिना किसी राजनीतिक संबद्धता वाले आंदोलन का नेतृत्व किया। संगठन, जिसे अब केरल राज्य सेवा पेंशनभोगी संघ कहा जाता है, वरिष्ठ नागरिकों को अपनी बातें मनवाने की शक्ति प्रदान करने में सहायक रहा है और यह देश में पेंशनभोगियों का सबसे बड़ा संघ है। वह भारतीय विद्या भवन, थ्रिशूर चैप्टर के संस्थापक सदस्य भी थे और आजीवन इस संस्था के सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय रहे। इन गतिविधियों के अतिरिक्त, उनके नाम पर लगातार तीस बार हिमालय भ्रमण का अनोखा रिकॉर्ड है। वह लंबे समय से अपनी जन्म-शताब्दी वर्ष तक, श्री सारदा आश्रम नागरकोइल के तीर्थ समूह के आचार्य रहे।

6. श्री नम्बूतिरिपाड़ का 27 जून, 2023 को निधन हो गया।